Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 11 भारतमाता एवं अहा! धरती कितना देती है सुमित्रानंदन पंत

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. भारतमाता है –

(क) ग्रामवासिनी

(ख) नगर-वासिनी

(ग) पाताल-वासिनी

(घ) महल-वासिनी

उत्तर: (क) ग्रामवासिनी

प्रश्न 2. कविता लिखते समय भारतमाता की संतानों की संख्या कितनी थी

(क) 20 करोड़

(ख) 30 करोड़

(ग) 40 करोड़

(घ) 120 करोड़

उत्तर: (ख) 30 करोड़

अतिलघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कविता में भारतमाता का आँचल कैसा दिखता है?

उत्तर: कविता में भारतमाता का आँचल श्यामल , धूलभरा और मैला-सा दिखता है।

प्रश्न 2. भारतमाता को किसकी प्रकाशिनी बताया गया है?

उत्तर: भारतमाता को गीता की प्रकाशिनी बताया गया है।

प्रश्न 3 धरती कितना देती है ' में कवि ने बचपन में क्या बोए थे ?

उत्तर: 'धरती कितना देती है' कविता में कवि ने पैसे बोए थे।

प्रश्न 4. ऊपर बढ़ती बेलों की तुलना लेखक ने किससे की है ?

उत्तर: कवि ने ऊपर की ओर बढ़ती बेलों की तुलना झरने से की है।

प्रश्न 5. नए उगे सेम के पौधे कवि को कैसे लगे?

उत्तर: नए उगे सेम के पौधे कवि को छाता ताने खड़े नवागतों के समान तथा चिड़ियों के अंडे तोड़कर निकले बच्चों के जैसे लगे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पैसे बोकर कवि ने क्या कल्पना की ?

उत्तर: पैसे बोकर कवि ने कल्पना की कि पैसों के सुन्दर पेड़ उगेंगे। उन पर रुपयों के कलदार मूल्यवान खनकती फसलें पैदा होंगी। उससे कवि के पास बहुत सारे पैसे आ जायेंगे और वह धनवान हो जायेगा तथा मोटा ताजा सेठ बन जायेगा।

प्रश्न 2. ग्रामवासिनी भारत माता किस हालात में दिखती है?

उत्तर: ग्रामवासिनी भारत माता की आँचल धूलभरी और मटमैला है, उसकी आँखों में गंगा-जमुना , के आँसू हैं। वह दीन है तथा नीचे को आँखें झुकाए है। उसके होठों पर रुदन तथा मन में विषाद है। वह अपने घर में ही प्रवास कर रही है। वह मिट्टी की मूर्ति के समान। दरिद्र है।

प्रश्न 3. भारत माता का संयम किस प्रकार से सफल रहा है ?

उत्तर: भारत माता ने कष्टों को संयमपूर्वक सहन किया है। उसने पराधीनता की पीड़ा को धैर्यपूर्वक सहन किया है। अब उसकी तपस्या तथा संयम सफल हो गया है। उसकी पराधीनता तथा पीड़ा का अन्त होने वाला है। उसको महात्मा गाँधी की अहिंसा का बल मिल गया है।

प्रश्न 4. कवि ने सेम की फलियाँ किस-किस को बाँटीं?

उत्तर: कवि ने सेम की फलियाँ अपने मित्रों , बंधु-बान्धवों, अभ्यागतों तथा भिखारियों को बाँटीं। उसने अपने पास पड़ोस में रहने वालों को फलियाँ दीं। उसके परिचित-

अपरिचित सभी लोगों को कवि से सेम की फलियाँ मिलीं। दिन-रात सभी ने उन फलियों को खाकर उनका आनन्द लिया।

प्रश्न 5. कवि लोभवश क्या नहीं समझ पाया था ?

उत्तर: कवि ने लोभवश बचपन में पैसे बोये थे। अब वह समझा कि उसने गलती की थी। यह धरती माता बहुत देने वाली है। यह अपनी संतान की हर आवश्यकता के लिए चीजें पैदा करती है। यह रत्न पैदा करने वाली है। कवि पैसों के पेड़ न उगने से धरती को बंजर समझ बैठा था। वह उसकी उदारता तथा अपार उर्वरता को समझ नहीं पाया था।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. भारत माता की स्थिति कविता में कैसी है? क्यों?

उत्तर: कविता में भारत माता को ग्रामवासिनी कहा है। वह दरिद्रता की मूर्ति है तथा उदास है। उसका आँचल मटमैला तथा धूल से भरा है। खेत उसका आँचल है तथा गंगा-यमुना नदियाँ उसके नेत्रों से बहते आँसू हैं। उसकी आँखों में दीनता है। निगाह नीचे को ओर झुकी है। उसके होठों पर रुदन तथा मन में दुख भरा है। अपने घर में ही निर्वासित है। उसकी तीस करोड़ संतानें नंगी , आधी भूखी, असुरक्षित, शोषित, अज्ञानी, अशिक्षित, निर्धन तथा अपमानित हैं। घर न होने से वह पेड़ के नीचे रहने को मजबूर हैं। मूल्यवान फसलें पैदा करके भी वह पददलित है। वह सृजनशील है। उसका मन निराशाग्रस्त है। उसके काँपते होंठों के पीछे हँसी छिपी है। उसकी दशा राहुग्रस्त चन्द्रमा जैसी है। उसकी भौंहें चिन्ताग्रस्त हैं। आँखें आँसुओं में डूबी हैं। भारत माता पराधीन है। इस पराधीनता के कारण वह निर्धनता, निराशा और पीड़ा के गर्त में पड़ी है।

प्रश्न 2. पैसे एवं सेम की बिजाई के माध्यम से कवि कविता में क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर: कवि ने बचपन में लोभ में पड़कर कुछ पैसे जमीन में बो दिये थे। उनके अंकुरित होने की उसने बहुत दिनों तक प्रतीक्षा की परन्तु उनमें से एक भी अंकुर नहीं फूटा। उसने मान लिया कि धरती बंजर है। तब से पचास वर्ष बीत गए। वह उस घटना को भूल गया। उसमें याद रखने योग्य कोई बात थी भी नहीं। एक बार वर्षा के जल से भीगी भूमि में उसने सेम के बीज रोप दिए। कुछ दिन बाद उसने देखा कि आँगन में सेम के छोटे-छोटे पौधे उग आए हैं। वे पौधे बड़े हुए। सेम की बेलें फल गईं। उन पर असंख्य फलियाँ लगीं। कवि ने उन फलियों को अपने मित्रों, बंधु-बांधवों, अभ्यागतों तथा भिखारियों को बाँटा। उसने पास-पड़ोस के लोगों को भी सेम की फलियाँ दीं। पूरे मुहल्ले के लोगों ने सुबह-शाम सेम की फलियाँ पकाकर खाईं।

अब कवि की समझ में आया कि बचपन में वह गलत था। उसने गलत बीज बोए थे। पैसे बोए थे , जो नहीं उगे परन्तु सेम की भारी फसल पैदा हुई। उसने माना कि धरती बंध्या नहीं रत्न प्रसविनी है। उसमें मानवों के बीच समानता, ममता तथा क्षमता के बीज बोने हैं। पैसे बोने तथा सेम के बीज बोने के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि दोष धरती का नहीं , उसमें बीज बोने वालों का होता है। पैसे बोने पर उनका न उगना कवि के बचपने का नतीजा था। सेम के बीज बोना उसकी समझदारी थी। समझदारी से किया गया कार्य सफल होता है। सेम के बीज उगे और ढेर सारी फलियाँ उत्पन्न हुईं। हम जैसा काम करते हैं, उसका वैसा ही परिणाम हमें प्राप्त होता है। हमें चाहिए कि धरती पर लोगों में प्रेम , ममता, समानता, कार्य-क्षमता आदि पैदा करें। तभी यह धरती अपनी संतान की सच्ची माता बन सकेगी।

प्रश्न 3. पंत जी के रचना कर्म पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: चौथी कक्षा से ही पंतजी ने कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। 1916 में लिखी 'गिरजे का घण्टा ' शीर्षक कविता उनकी प्रथम कविता मानी जाती है। कवि की रचना यात्रा को चार चरणों में बाँटा जा सकता है। प्रथम-चरण - 'उच्छ्वास' से लेकर 'गुंजन' तक की कविता , भाव एवं सौन्दर्य चेतना से भरपूर हैं। गुंजन काल की रचनाओं में जीवन-विकास के सत्य पर पंत का अटल विश्वास झलकता है। प्रमुख संग्रह 'उच्छ्वास' (1920 ई०), 'ग्रन्थि' (1920ई०), वीणा' (1927 ई०), 'पल्लव' (1928 ई०), और 'गुंजन' (1932 ई०) हैं।

द्वितीय-चरण - इसमें कवि की कविताएँ नवीन जीवन तथा युग-परिवर्तन की धारणा को सामाजिक रूप देने की

THE HINDI PAGE www.thehindipage.com

कोशिश करती दिखाई देती है। कविताओं पर प्रगतिवाद एवं मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई देता है। इस चरण की कृतियाँ हैं - (1) युगान्त' 1936 (2) 'युगवाणी' 1939 (3) 'ग्राम्या 1940। इसी दौरान आपने रूपाभ नामक पत्र का भी सम्पादन किया।

तीसरा-चरण पंत जैसे भावुक-मन कवि अधिक समय तक प्रगतिवाद और मार्क्सवाद की कठोर धारा में नहीं रह सके। वे पुनः अपनी मूल धारा के काव्य की रचना करने लगे। तृतीय चरण की रचनाओं में स्वर्ण किरण , 'स्वर्ण धूलि, 'युगपथ. 'अतिमा', 'उत्तरा' आदि शामिल हैं। चौथा-चरण - 'कला और बूढ़ा चाँद से लेकर 'लोकायतन' तक चौथे चरण में उनकी चेतना मानवतावाद की तरफ प्रवृत्त हुई। यहाँ कवि व्यक्ति और समाज के मध्य सामंजस्य स्थापित कर लोक-मंगल
की कामना रखता है। चिदम्बरा में इनकी कविताओं का संकलन है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि कवि रचनाओं के विकास क्रम में विचारों के विषय में परिवर्तनशील रहे हैं। यहाँ निराला और पंत में अन्तर स्पष्ट दिखता है कि निराला का परिवर्तन जहाँ एक दिशा विशेष की तरफ अग्रसर होता रहता है वहीं पंत के परिवर्तन में एक अस्थिरता एवं अनिश्चितता है। कुछ भी हो पंत एक प्रकृति के चितेरे कवि रहे हैं। उन्होंने भारतीय काव्य जगत में बँधी-बैधाई लीक से हटकर उसे एक नई दिशा प्रदान की है। पंत की कविताओं में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं - प्रकृति एवं सौन्दर्य से अभिभूत कर देने वाले चित्र। रचनाओं में सर्वप्रथम कला उसके उपरान्त विचार एवं अन्त में भावों का स्थान रहता है। शिल्प को अधिक महत्व दिया है। अलंकृत एवं चित्रमयी भाषा का प्रयोग दूसरे चरण की कविता में प्रगतिवादी प्रभाव । उनके काव्य में विषय एवं शैलीगत गतिशीलता विद्यमान रही हैं। भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के समन्वय का प्रयास रूपों एवं प्रतीकों का प्रयोग।

पंतजी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है यथा- पद्मभूषण (1961) ज्ञानपीठ (1968) , साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार।

से अभिभूत कर देने वाले चित्र। रचनाओं में सर्वप्रथम कला उसके उपरान्त विचार एवं अन्त में भावों का स्थान रहता है। शिल्प को अधिक महत्व दिया है। अलंकृत एवं चित्रमयी भाषा का प्रयोग दूसरे चरण की कविता में प्रगतिवादी प्रभाव । उनके काव्य में विषय एवं शैलीगत गतिशीलता विद्यमान रही हैं। भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के समन्वय का प्रयास रूपों एवं प्रतीकों का प्रयोग।

पंतजी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है यथा- पद्मभूषण (1961) ज्ञानपीठ (1968) , साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार।

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 11-भारतमाता एवं अहा! धरती कितना देती है-सुमित्रानंदन पंत

कवि परिचय

कवि सुमित्रानन्दन पंत का जन्म उत्तराखण्ड के जिला अल्मोड़ा के गाँव कौसानी में हुआ जन्म के छः घण्टे बाद ही माता का निधन हो गया। इनका प्रारम्भिक नाम गुसाईदत्त रखा गया प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। 1918 में मँझले भाई के साथ काशी आकर क्वींस कॉलेज से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आप इलाहाबाद आ गए। बाद में इन्होंने अपना नाम सुमित्रानन्दन पंत रख लिया 1921 में असहयोग आंदोलन एवं महात्मा गांधी के प्रभाव से महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला का अध्ययन करने लगे। इन्होंने इलाहाबाद आकाशवाणी में शुरूआती दिनों में सलाहकार के रूप में भी कार्य किया

अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा बचपन से ही पंतजी को प्रभावित करती रही , जिसका प्रभाव उन पर जीवनभर रहा।

चौथी कक्षा से ही पंतजी ने कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। 1916 में लिखी 'गिरजे का घण्टा' शीर्षक कविता उनकी प्रथम कविता मानी जाती है। कवि की रचना यात्रा को चार चरणों में बाँटा जा सकता है। प्रथम-चरण - 'उच्छ्वास' से लेकर 'गुंजन' तक की कविता, भाव एवं सौन्दर्य चेतना से भरपूर हैं। गुंजन काल की रचनाओं में जीवन-विकास के सत्य पर पंत का अटल विश्वास झलकता है। प्रमुख संग्रह 'उच्छ्वास' (1920 ई०), 'ग्रन्थि' (1920ई०), वीणा' (1927 ई०), 'पल्लव' (1928 ई०), और 'गुंजन' (1932 ई०) हैं।

द्वितीय-चरण - इसमें कवि की कविताएँ नवीन जीवन तथा युग-परिवर्तन की धारणा को सामाजिक रूप देने की कोशिश करती दिखाई देती है। कविताओं पर प्रगतिवाद एवं मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई देता है। इस चरण की कृतियाँ हैं - (1) युगान्त' 1936 (2) 'युगवाणी' 1939 (3) 'ग्राम्या 1940। इसी दौरान आपने रूपाभ नामक पत्र का भी सम्पादन किया।

तीसरा-चरण पंत जैसे भावुक-मन कवि अधिक समय तक प्रगतिवाद और मार्क्सवाद की कठोर धारा में नहीं रह सके। वे पुनः अपनी मूल धारा के काव्य की रचना करने लगे। तृतीय चरण की रचनाओं में स्वर्ण किरण, 'स्वर्ण धूलि, 'युगपथ. 'अतिमा', 'उत्तरा' आदि शामिल हैं। चौथा-चरण - 'कला और बूढ़ा चाँद से लेकर 'लोकायतन' तक चौथे चरण में उनकी चेतना मानवतावाद की तरफ प्रवृत्त हुई। यहाँ कवि व्यक्ति और समाज के मध्य सामंजस्य स्थापित कर लोक-मंगल की कामना रखता है। चिदम्बरा में इनकी कविताओं का संकलन है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि कवि रचनाओं के विकास क्रम में विचारों के विषय में परिवर्तनशील रहे हैं। यहाँ निराला और पंत में अन्तर स्पष्ट दिखता है कि निराला का परिवर्तन जहाँ एक दिशा विशेष की तरफ अग्रसर होता रहता है वहीं पंत के परिवर्तन में एक अस्थिरता एवं अनिश्चितता है। कुछ भी हो पंत एक प्रकृति के चितेरे कवि रहे हैं। उन्होंने भारतीय काव्य जगत में बँधी-बैधाई लीक से हटकर उसे एक नई दिशा प्रदान की है। पंत की कविताओं में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं - प्रकृति एवं सौन्दर्य से अभिभूत कर देने वाले चित्र। रचनाओं में सर्वप्रथम कला उसके उपरान्त विचार एवं अन्त में भावों का स्थान रहता है। शिल्प को अधिक महत्व दिया है। अलंकृत एवं चित्रमयी भाषा का प्रयोग दूसरे चरण की कविता में प्रगतिवादी प्रभाव । उनके काव्य में विषय एवं शैलीगत गतिशीलता विद्यमान रही हैं। भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के समन्वय का प्रयास रूपों एवं प्रतीकों का प्रयोग।

पंतजी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है यथा- पद्मभूषण (1961) ज्ञानपीठ (1968), साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार।

पाठ परिचय

इस अध्याय में कवि पंत की दो कविताओं को लिया गया है। प्रथम कविता 'भारत माता' 'ग्राम्य नामक कविता संग्रह से ली गई है। इसमें स्वतंत्रता से पूर्व के ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण है ग्रामीण जीवन दरिद्रता के अभिशाप से ग्रस्त है। कवि ने प्रतीक रूप में भारतमाता को ग्रामवासिनी बताकर भारत की दुर्दशा का वर्णन किया है। परन्तु कवि निराश न होकर आशा से भरपूर रहता है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

दूसरी कविता 'धरती कितना देती है पंत के भाग्यवादी दर्शन पर आधारित है। इसमें कवि स्पष्ट रूप से कहता है कि जैसा कर्म होगा वैसा ही फल प्राप्त होगा अतः व्यक्ति को स्वार्थ एवं लोभ के वशीभूत होकर कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिसका परिणाम अच्छा न हो।

सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ

भारत माता

भारत माता
ग्रामवासिनी।।
खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा मैला सा आँचल,
गंगा यमुना में आँसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी!
दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग-युग के तम से विषण्ण मन,
वह अपने घर में।
प्रवासिनी!

शब्दार्थ – श्यामल = हरा-भरा। प्रतिमा = मूर्ति। उदासिनी = दुःखी। दैन्य = दीनता। जड़ित = जड़ा हुआ। अपलक = बिना पलकें झपकाये। चितवन = निगाह , दृष्टि। अधर = होंठ। नीरव = मौन , शान्त। विषण्ण = दुःखी, व्याकुल। प्रवासिनी = अपने देश से बाहर रहने वाली।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'भारत माता' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पन्त हैं। कवि ने भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व गाँवों में व्याप्त दीनता और निर्धनता का चित्रण किया है। उसने बताया है कि भारत माता ग्रामों में रहने वाली है।

व्याख्या – कवि ने भारत के गाँवों की स्वतंत्रता से पूर्व की दशा का वर्णन कर रहा है। वह कहता है कि भारत माता गाँवों की रहने वाली है अर्थात् भारत गाँवों में रहता है। हरे-भरे खेत भारत माता की आँचल है , जो धूल से सना हुआ और मैला है। गंगा और यमुना नदियाँ उसके नेत्रों से बहने वाले आँसू हैं। वह मिट्टी की बनी हुई नारी उदास और शान्त है। भारत माता के नेत्रों से दीनता प्रकट हो रही है। वह बिना पलक झपकाये एकटक देख रही है। इससे उसकी उदासी प्रकट हो रही है। उसके होठों में चिरस्थायी रुदन स्थित है , उसके होठों की ओर देखने से लगता है कि मन में लम्बे समय से विषाद छाया रहा है। वह अपने घर में रहते हुए भी जैसे विदेश में रह रही है।

विशेष –

1. भारतमाता के चित्रण के माध्यम से भारत के गाँवों की दुर्दशा का वर्णन हुआ है।
2. विता पर गाँधीवाद तथा प्रगतिवाद का प्रभाव है।
3. मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास अलंकार है।

4. भाषा साहित्यिक, प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है।

2. तीस कोटि संतान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नत-मस्तक तरु तल निवासिनी!
स्वर्ण शस्य पर-पदतल कुंठित,
धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित, राहु-ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी

शब्दार्थ – कोटि = करोड़। क्षुधित = भूखा। शोषित = शोषण की शिकार। निरस्त्र = अरक्षित। मूढ़ = मूर्ख। नतमस्तक = पराधीन। शस्य = पौधा। कुंठित = रोती हुई। सहिष्णु = सहनशील। कुंठित = कुंठाग्रस्त , निराश। क्रंदन = चीख, रोना। स्मित = मुस्कान। राहु-ग्रसित = राहु से ग्रस्त। शरदेन्दु = शरदकालीन चन्द्रमा।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'भारत माता' शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता कविवर सुमित्रानन्दन पन्त हैं। कवि भारत माता की रक्षा का वर्णन कर रहा है। भारतमाता ग्रामीण भारत की प्रतीक है। पराधीनता की अवस्था में उसकी स्थिति दयनीय है।

व्याख्या – कवि कहता है कि भारत माता पराधीन है। उसकी तीस करोड़ संताने अर्थात् भारतीय जन वस्त्रों के अभाव में नंगे रहते हैं। उनको भरपेट भोजन नहीं मिलता , वे शोषण के शिकार हैं तथा असुरक्षित हैं। वे भूखे , असभ्य तथा बिना पढ़े-लिखे हैं। वे गरीब हैं। तथा पराधीनता के कारण उनका माथा नीचे झुका हुआ है। बे बेघर हैं तथा वृक्षों के नीचे रहते हैं। भारत माता पेड़ों की छाँव में रहने को विवश है।
भारत माता सुनहरी फसलें पैदा करने वाली है किन्तु उसको दूसरों के पैरों पर लेटना पड़ता है। वह पराधीन है। इस कारण धरती के जैसा सहनशील मन होने पर भी उसका मन कुंठा और निराशा से भरा रहता है। उसके चीख-पुकार से काँपते हुए होठों के नीचे शान्त मुस्कराहट छिपी रहती है। राहु से ग्रस्त शरदकालीन चन्द्रमा जिस प्रकार निस्तेज हो जाता है, उसी प्रकार उसकी हँसी फीकी पड़ गई है।
विशेष –

1. भारतमाता के माध्यम से पराधीन ग्रामीण भारत का चित्र अंकित किया गया है।
2. भाषा संस्कृतनिष्ठ, विषयानुकूल तथा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है।
3. अनुप्रास, रूपक तथा उपमा अलंकार है।
4. 'राहु-ग्रस्त, शरदेन्दु हासिनी' में पराधीन भारत की तेजहीनता की ओर संकेत है।

3. चिंतित भृकुटि-क्षितिज तिमिरांकित
नमित नयन तन वाष्पाच्छादित
आनन श्री छाया शशि उपमित,
ज्ञान मूढ़ गीता प्रकाशिनी।

THE HINDI PAGE
www.thehindipage.com

सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन-मन-भय, भव-तम-श्रम,
जग जननी जीवन विकासिनी।
भारतमाता। ग्रामवासिनी।

शब्दार्थ – भृकुटि = भौंहें। तिमिरांकित = अन्धकारपूर्ण। वाष्पाच्छादित = भाप से ढके हुए , अश्रुपूर्ण। आनन = मुख। उपमित = तुल्य। ज्ञान मूढ़ = अज्ञानी। स्तन्य = दूध। भव = संसार। जग जननी = समस्त संसार की माता।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'भारत माता' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पन्त हैं। कवि ने पराधीनता के कारण पीड़ा भोग रही मातृभूमि का चित्रण किया है। अब उसको गाँधीजी की अहिंसा का सहारा प्राप्त हो गया है और इस कारण अब उसको पराधीनता से मुक्ति की आशा है।

व्याख्या – कवि कहता है कि भारत माता की भौंहें अंधकार से ढके हुए क्षितिज के समान चिन्ताग्रस्त हैं। बादलों से ढके आसमान के समान उसके नेत्र आँसुओं में डूबे हैं। उसके मुख की शोभा छायाग्रस्त चन्द्रमा के समान है। गीता का ज्ञान विश्व को कराने वाली भारतमाता आज अज्ञान से ग्रस्त है। आज उसका वर्षों का तप तथा संयम सफल हो गया है। वह गाँधीजी की अहिंसा का अमृत के समान मधुर दुग्ध अपनी सन्तान को पिला रही है। इससे भारतीय लोगों के मन से भय दूर हो रहा है , उनका अज्ञान और थकावट नष्ट हो रही है। भारत माता जगत की जननी है। वह जीवन को विकसित करने वाली है। भारतमाता गाँवों में रहने वाली हैं।

विशेष –

1. कवि ने पराधीनता से दुःखी भारतभूमि का वर्णन किया है।
2. गांधीजी का अहिंसा का सहारा पाकर वह स्वाधीनता का सुख पाने की आशा करती है।
3. भाषा संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक खड़ी बोली है।
4. अनुप्रास और रूपक अलंकार के प्रयोग हुए हैं। धरती कितना देती है।

आः धरती कितना देती है

1. आः धरती कितना देती है।
मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे।
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेगी,
और फूल फलकर मैं मोटा सेठ बनूंगा
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला।
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए।
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,

बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर।
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा, तृष्णा को सींचा था।

शब्दार्थ – छुटपन = बचपन। कलदार = मशीन से बना हुआ सिक्का, रुपया। खनकेंगी = सिक्कों के टकराने से उत्पन्न आवाजें। बंजर = अनुपजाऊ। अंकुर फूटना = बीज उगाना। बंध्या = अनुपजाऊ , हताश, अधीर। बाट जोहना = प्रतीक्षा करना। पाँवडे = पैरों के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा , पायदान। अपलक = दृष्टि गड़ाकर। तृष्णा = लालसा।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित ' धरती कितना देती है' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पन्त हैं। कवि अपने बचपन की एक घटना का उल्लेख कर रहा है। उसने अबोध अवस्था में जमीन में पैसे बोये थे। उसका यह कार्य ठीक ही था।

व्याख्या – कवि कहता है कि धरती से हमको बहुत-सी चीजें प्राप्त होती हैं। बचपन में कवि ने छिपकर जमीन में पैसे बो दिए थे। उसने सोचा था कि इन पैसों से पेड़ उगेंगे। इन पेड़ों पर रुपयों की खनकदार फसलें पैदा होंगी। तब उसके पास बहुत-सा धन हो जायेगा और वह फल-फूलकर मोटा हो जायेगा तथा धनवान सेठ बन जायेगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। अनुपजाऊ भूमि में बोए गए रुपयों में से एक से भी रुपया नहीं उगा। उस अनुपजाऊ मिट्टी से एक भी रुपया नहीं उपजा। कवि ने जो सेठ बनने की कल्पना की थी वह फलीभूत नहीं हुआ। उसके सपने साकार नहीं हुए। कवि निराश हो गया। वह कुछ दिन तक प्रतीक्षा करता रहा कि पैसे उगेंगे। जिस प्रकार किसी सम्माननीय मनुष्य के आने पर उसके रास्ते में कपड़ा बिछाकर उसका स्वागत किया जाता है, उसी प्रकार कवि अपनी बचपन की कल्पना में डूबकर रुपयों के उगने और पौधे बनने की प्रतीक्षा करता रहा। कवि बच्चा था और उसको ज्ञान नहीं था। रुपये उगकर पौधे नहीं बनते। उसने गलत बीज बोये थे। रुपयों के रूप में उसने ममता और तृष्णा को बोया था।

विशेष –

1. कवि ने बचपन में पैसे बोकर उनके उगने की कल्पना की थी। इसके पीछे उसका धनवान बनने का विचार था।
2. कवि बच्चा था और उसको ज्ञान नहीं था कि रुपये उगकर पौधे नहीं बना करते।
3. भाषा सरस और साहित्यिक है।
4. अनुप्रास, रूपक अलंकार के प्रयोग हुए हैं।

2. अर्धशती हहराती निकल गई तब से,
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा फूली, शरदें मुसकाई
सी-सी कर हेमन्त कपे, तरु झरे खिले वन,
औ, जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर
मैंने कौतूहलवश आँगन के कोने की

गीली तह में यों ही उँगली से सहलाकर
बीज सेम के दबा दिये मिट्टी के नीचे
भू के अंचल में मणि-माणिक बाँध दिए हों।

शब्दार्थ – अर्धशती = पचास वर्ष, आधा जीवन। मधु = बसन्त। शरदें = वर्षा के बाद की हल्की सर्दी की ऋतु। हेमन्त = पौष के महीने की जमाने वाली सर्दी। ऊदी = काला-बैंगनी रंगे। लालसा = लालच। कजरारे = काजल जैसे। कौतूहल = जिज्ञासा। तह = मिट्टी की परत। मणि माणिक्य = बहुमूल्य रत्न।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित ' धरती कितना देती है' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पंत हैं। कवि ने बचपन में अज्ञानवश भूमि में पैसों के बीज बोये थे। वे अंकुरित नहीं हुए। कवि इस घटना को भूल गया। तब से उसके जीवन के पचास वर्ष बीत गए। अनेक ऋतुएँ आईं और चली गईं।

व्याख्या – कवि कहता है कि बचपन की उस घटना को हुए जीवन के पचास वर्ष बीत गए हैं। अनेक बार वसन्त और पतझड़ की ऋतुएँ आईं और चली गई हैं। अनेक बार ग्रीष्म ऋतु में खूब गर्मी पड़ी है। वर्षा ऋतु भी अनेक बार आई और पेड़-पौधे फूले-फले हैं। वर्षा ऋतु के उपरान्त शरद् का हल्का-फुल्का ठंडा मौसम आया-गया है। हेमन्त ऋतु भी अनेक बार आई-गई है , जब तेज सर्दी के कारण मुँह से 'सी-सी' की आवाजें निकलती हैं। हेमन्त ऋतु भी अनेक बार आई और शरीर बर्फीली ठंड से काँप उठा था। इस प्रकार अनजाने ही पिछले पचास वर्ष बीत गये , फिर एक बार काले बादल पृथ्वी पर जल बरसाने लगे। उनके कारण धरती पर घना अंधकार छा गया। धरती की सतह गीली हो गई। कवि ने जिज्ञासापूर्वक अपने आँगन की गीली मिट्टी को उँगली से कुरेदा और उसके नीचे सेम के बीज दबा दिए। उन बीजों के के रूप में उसने धरती के आँचल में मूल्यवान रत्न बाँध दिए थे।

विशेष –

1. कवि ने वसन्ते, ग्रीष्म, वर्षा, शरद तथा हेमन्त ऋतुओं का सुन्दर चित्रण किया है।
2. काव्य में छः ऋतुओं का वर्णन होता रहा है। कवि ने शिशिर ऋतु को भुला दिया है।
3. भाषा संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक खड़ी बोली है।
4. मानवीकरण पुनरुक्ति, अनुप्रास, उपमा अलंकार आदि के प्रयोग हुए हैं। अतुकान्त छन्द भी लिया गया है।

3. मैं फिर भूल गया इस छोटी सी घटना को,
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन!
किन्तु, एक दिन जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था,-तब सहसा मैंने जो देखा।
उससे हर्ष-विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से।
देखा-आंगन के कोने में कई नवागत
छोटा-छोटा छाता ताने खड़े हुए हैं।
छाता कहूँ कि विजय-पताकाएँ जीवन की,

या हथेलियाँ, खोले थे वे नन्ही प्यारी
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मार कर उड़ने को उत्सुक लगते थे
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से।

शब्दार्थ – हर्ष-विमुख = प्रसन्नता के कारण सुध-बुध खोना। विस्मय = आश्चर्य। नवागत = नए आगन्तुक , पौधे। पताको = झंडा। उल्लास = प्रसन्नता। उत्सुक = इच्छुक। डिम्ब= झण्डी।।
सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'धरती कितना देती है' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पंत हैं। कवि ने बरसात में अपने घर के आँगन की गीली मिट्टी में सेम के बीज दबा दिये थे। इसके बाद उसको इसके बारे में कुछ याद नहीं रहा।

व्याख्या – पंतजी कहते हैं कि वह यह भूल गए कि उन्होंने अपने घर के आँगन में सेम के बीज बो दिए थे। घटना बहुत मामूली थी तथा इसमें स्मरण रखने योग्य कोई बात नहीं थी। एक दिन शाम के समय वह आँगन में टहल रहे थे। अचानक उन्होंने जो देखा उससे वह अत्यधिक प्रसन्न हुए , सुध-बुध खो बैठे तथा आश्चर्यचकित हो उठे, उन्होंने देखा कि आँगन में अनेक नए छोटे पौधे उग आए हैं। वे पौधे उनके छोटे-छोटे छाते लगाए हुए आगन्तुकों के समान प्रतीत हुए। कवि उनको छाते अथवा विजय की घोषणा करने वाले झण्डे भी कह सकते थे अथवा इन्होंने अपनी छोटी-छोटी प्यारी हथेलियाँ फैला रखी थीं। कुछ भी कहें किन्तु वे हरे-भरे तथा प्रसन्नता से भरे पौधे चिड़ियों के अंडे फोड़कर बाहर निकले और पंख फैलाकर उड़ने के लिए उत्सुक बच्चों जैसे प्रतीत हो रहे थे।
विशेष –

1. सेम के नए उगे पौधों का काव्यमय चित्रण हुआ है।
2. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा विषयानुरूप है।
3. पुनरुक्ति, संदेह, उपमा अलंकार के प्रयोग हुए हैं।
4. मुक्त छंद अतुकान्त है।
5. पैसे तो नहीं उगे किन्तु सेम के बीज उग आए। कवि बताना चाहता है कि सही ढंग से प्रयत्न करने पर ही सफलता मिलती है।

4. निर्निमेष, क्षणभर में उनको रहा देखता
सहसा मुझे स्मरण हो आया-कुछ दिन पहले
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से
नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।
तब में उनको रहा देखता, धीरे-धीरे।।
अनगिनत पत्तों से लद, भर गईं झाड़ियाँ,
हरे-भरे टॅग गए कई मखमली चॅदोवे।

THE HINDI PAGE जानें कुछ नया www.thehindipage.com

बेलें फैल गईं बल खा आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाडे सी ट्टटी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को।

शब्दार्थ – निर्निमेष = अपलक, बिना पलकें झपकाए। रोपे थे = बोये थे। बौने = कम लम्बे। पलटन = सेना का दस्ता। नाटे = ठिगने। अनगिनत = असंख्य। मखमली = कोमल। चंदोवे = तम्बू। बल खा = टेढ़ी-मेढ़ी होकर। बाड़े सी टट्टी = सुरक्षा के लिए लगाई गई पौधों के लिए जालियों की दीवार। हरे-हरे सौ झरने = अनेक हरी-भरी लताएँ।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'धरती कितना देती है' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पंत हैं। कवि ने देखा कि उसके आँगन में अनेक नए पौधे उग आये हैं। उनको दखकर वह विस्मित हो उठा। वे पौधे छाते लगाये नवीन आगन्तुकों की तरह प्रतीत हो रहे थे।

व्याख्या – कवि अपने आँगन में उगे हुए सेम के नए पौधों को कुछ देर तक एकटक देखता रहा। अचानक उसको याद आया कि कुछ दिन पहले उसने आँगन में सेम के बीज बोये थे। वे ही आज छोटे-छोटे पौधों के रूप में उग आए थे। छोटे पौधों की यह सेना कवि के नेत्रों के सामने गर्व के साथ खड़ी थी और अपने छोटे नाटे पैर पटककर मानो कह रही थी। कवि उनको देखता रहा। धीरे-धीरे वे पौधे असंख्य पत्तियों से लद गए और अनेक झुरमुट छोटे-छोटे तम्बुओं की तरह तन गए। सेम की बेलें एक-दूसरे से लिपटकर आँगन में फैल गईं और लहराने लगीं। वे सुरक्षा के लिए लगाई गई पेड़-पौधों की दीवार का सहारा लेकर ऊपर की ओर बढ़ने लगीं। वे हरे रंग के सैकड़ों ऊपर की ओर फूटने वाले झरनों के समान प्रतीत हो रही थीं।

विशेष –

1. कवि ने सेम के बीज बोये थे। उनसे उत्पन्न बेलें आँगन में छा गई थीं।
2. भाषा सरल, सरस तथा प्रवाहपूर्ण है।
3. मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास अलंकार के प्रयोग हुए हैं।
4. अतुकान्त युक्त छंद है।

5. मैं अवाक् रह गया-वंश कैसे बढ़ता है।
छोटे, तारों-से छितरे, फूलों के छींटे।
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों-से,
ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं।
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ
पतली चौड़ी कलियाँ, उफ उनकी क्या गिनती
लम्बी-लम्बी अंगुलियों सी, नन्ही नन्हीं।
तलवारों-सी, पन्ने के प्यारे हारों-सी,
झूठ न समझें, चन्द्रकलाओं-सी नित बढ़तीं,
सच्चे मोती की लड़ियों सी, ढेर-ढेर खिल

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

झुण्ड-झुण्ड, झिलमिलकर कचपचिया तारों-सी,

शब्दार्थ – अवाक् = मौन, चुप । वंश = परिवार । छितरे-बिसरे = बिखरे हुए। श्यामल = हरी-हरी। लता = बेल। मावस = अमावस्या। बूटे = फूल। पन्ना = हरे रंग का एक रत्न। चन्द्रकला = चन्द्रमा की किरण। लड़ी = माला । कचपचिया = पूर्व दिशा में उगे तारों का एक समूह।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'धरती कितना देती है' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पंत हैं। कवि ने अपने घर के आँगन में सेम के बीज रोपे थे। वे बार-बार पौधों के रूप में उगे और देखते-देखते बेलों के रूप में चारों ओर फैल गए। उन पर कई हरे-हरे चँदोवे टँग गए।

व्याख्या – कवि कहता है कि बेलें तेजी के साथ विकसित हुईं तो कवि ने देखा कि परिवार किस तरह तेजी से बढ़ता है। यह देखकर वह इतना विस्मित हुआ कि कुछ भी बोल नहीं सका। उन हरी-हरी लहराती बेलों पर तारों के समान बिखरे हुए , पौधों से लिपटे हुए। छोटे-छोटे फूल अत्यन्त सुन्दर लग रहे थे। अमावस्या के हँसमुख आकाश की तरह लग रहे थे अथवा किसी स्त्री की चोटी में गूंथे मोतियों से प्रतीत हो रहे थे अथवा वे किसी सुन्दरी की साड़ी के पल्ले में काढ़े गए फूलों के समान लग रहे थे। कुछ समय पश्चात् इन फूलों से फलियाँ पैदा हुईं। वे असंख्य थीं। वे अत्यन्त प्यारी लग रही थीं।

बेलों में अनगिनत पतली-चौड़ी फलियाँ लद गई थीं। वे फलियाँ उँगलियों के समान लम्बी थीं । वे लम्बी-लम्बी तलवारों के समान थीं। वे पन्ने से बने गलहारों की तरह थीं। कवि कहता है। कि उसके इस कथन को झूठ न समझा जाये। ये फलियाँ चन्द्रमा की किरणों के समान नित्य बढ़ती जाती थीं। वे सच्चे मोतियों की लड़ियों जैसी प्रतीत हो रही थीं। वे इन फलियों के झुण्ड के झुण्ड बेलों पर लटके थे। वे आकाश में पूर्व दिशा में उगने वाले झिलमिलाते कचपचिया तारों के समान लग रही थीं।

विशेष –

1. कवि ने आँगन में सेम के बीज रोपे थे। उनसे उत्पन्न बेलें असंख्य फलियों से लद गए।
2. फलियों का मार्मिक चित्रण किया गया है।
3. अनुप्रास, उपमा तथा संदेह अलंकार है। पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार भी है। अतुकान्त युक्त छंद को प्रयोग किया गया है।
4. भाषा बोधगम्य, साहित्यिक तथा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है।

6. आ, इतनी फलियाँ टूटीं, जाड़ों भर खाईं।
सुबो शाम वे घर-घर पकीं, पड़ोस पास के
जाने-अनजाने सब लोगों में बँटवाईं,
बंधु-बांधवों, मित्रों, अभ्यागत मँगतों ने,
जी भर-भर दिन-रात मुहल्ले भर ने खाईं।
कितनी सारी फलियाँ कितनी सारी फलियाँ

शब्दार्थ – जाड़ों भर = सर्दी का पूरा मौसम। अभ्यागत = अतिथि। मँगतों = भिखारियों।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित ' धरती कितना देती है' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पंत हैं। कवि ने अपने घर के आँगन में सेम के बीज बोये थे। उनसे जो बेलें पैदा हुईं, वे खूब फल-फूल। उन पर लगने वाली सेम की अगणित फलियों में कवि ने सभी के साथ मिलकर उपभोग किया।

व्याख्या – कवि कहता है कि सेम की बेलों पर पैदा होने वाली फलियाँ असंख्य थीं। उन पर इतनी अधिक फलियाँ लगीं कि पूरे सर्दी के मौसम में खाने पर भी वे समाप्त न हुईं। घर-घर सुबह-शाम इन फलियों की सब्जी बनाई गई । कवि ने उनको अपने पास रहने वाले पड़ोसियों, जान-पहचान वालों तथा अनजान लोगों को बाँटा। फलियाँ इतनी अधिक थीं कि मित्रों , भाइयों, परिवारवालों, अतिथियों तथा भिखारियों ने दिन-रात मन भरकर उनको खाया। मुहल्ले के रहने वाले सभी लोगों ने उन फलियों को खाया।

विशेष –

1. सेम की बेलों पर लगने वाली फलियाँ असंख्य थीं। कवि ने अपने परिचितों तथा अन्य लोगों को मुक्तहस्ते फलियाँ बाँटीं।
2. इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि पृथ्वी माता अपनी संतान के लिए मुक्त मन से आवश्यकता की चीजें प्रदान करती
3. भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है।
4. अतुकान्त मुक्तक छंद है। पुनरुक्ति प्रकाश तथा अनुप्रास अलंकार है।

7. यह धरती कितना देती है, धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को।
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को,
बचपन में निज स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर।
रत्न-प्रसविनी है वसुधा अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची ममता के दाने बोने हैं।
इसमें मानवता समता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूलि सुनहरी फसलें।
मानवता के जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ।
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

शब्दार्थ – प्रसविनी = उत्पन्न करने वाली। वसुधा = पृथ्वी । दाने = 'बीज। समता = काम करने की सामर्थ्य । उगल सके = पैदा कर सके। धूलि = मिट्टी। सुनहरी = बहुमूल्ये।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'धरती कितना देती है' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता सुमित्रानन्दन पंत हैं। कविवर पंत ने बताया है कि यह तो अत्यन्त उदार है। वह

हमारी माता है तथा अपनी संतान के भरण-पोषण के लिए अनेक चीजें पैदा करती है। मनुष्य को उसमें सही बीज बोने चाहिए।

व्याख्या – कवि कहता है कि यह पृथ्वी हमारी माता है। यह अपनी प्यारी संतान की जरूरतें पूरा करने के लिए के लिए जी भरकर चीजें प्रदान करती है। यह धरती हमको बहुत कुछ देती है। कवि धरती माता की इस महिमा को बचपन में समझ नहीं सका था और उसने लोभ में पड़कर स्वार्थ पूरा करने के लिए पैसे बो दिए थे। कवि यह समझ गया है कि यह धरती अनेक रत्नों को पैदा करने वाली है , किन्तु सही बीज बोकर ही इससे अच्छी फसलें पैदा की जा सकती हैं। कवि कहता है कि मनुष्य इस धरती में सच्ची ममत्व भाव के बीज बोये। वह इसमें लोगों की काम करने की सामर्थ्य के बीज बोये। मनुष्य इसमें मानवता की ममता के बीज बोये। यदि वह ऐसा करेगा तो मिट्टी से मूल्यवान फसलें उत्पन्न होंगी। मनुष्य के परिश्रमपूर्ण जीवन से सभी दिशाएँ हँस उठेगी।

कवि कहना चाहता है कि लोगों को धरती पर एक-दूसरे के प्रति ममता की भावना का विकास करना चाहिए तथा अपनी कार्यक्षमता में वृद्धि करनी चाहिए। मनुष्यों के बीच समानता का भाव उत्पन्न करना चाहिए। जब लोगों में परस्पर प्रेम होता है, तब वे कार्य करने में उत्कृष्ट तथा उन्नत होते हैं। हम जैसी बीज बोयेंगे, वैसे ही फल उसे प्राप्त होंगे। मनुष्य जैसा कार्य करता है, उसका वैसा ही परिणाम उसको मिलता है।

विशेष –

1. इन पंक्तियों में कवि ने सत्कर्म करने की प्रेरणा तथा संदेश दिया है।
2. कवि कर्मवाद के सिद्धान्त से प्रभावित दिखाई दे रहा है।
3. भाषा बोधगम्य सरस तथा साहित्यिक है।
4. अनुप्रास तथा रूपक अलंकार हैं। अतुकान्त मुक्त छंद है

THE HINDI PAGE
जाने कुछ नया
www.thehindipage.com

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg